B.A. Part-I Psychology (Subsidiary)

Teacher – A.K. Sinha Date – 09.11.2020 Page-5

Topic – Social Determinants of Personality

2. पड़ोस का प्रभाव (Effect of Neighbourhood) — बच्चे जब कुछ बड़े हो जाते हैं तो अपने पड़ोस के हमउम्र के बच्चों के साथ मिलने-जुलने लगते हैं तथा पड़ोसियों के घरों में आने-जाने लगते हैं जिससे सामाजिक रहन-सहन, तौर-तरीकों तथा अभियोजन सम्बन्धी गुणों को ग्रहण कर लेते हैं। इस प्रकार इन प्रभावों के परिणाम स्वरूप उनके व्यक्तित्व के सामाजिक अभियोजन सम्बन्धी गुणों का विकास होता है। पड़ोस में यदि तुरंत-तुरंत बदलने वाले लोग रहते हों तो उनके व्यक्तित्व में स्थायी मित्र रखने तथा सहयोग की भावना का विकास अपेक्षाकृत कम होता है बनिस्पत कि ऐसे बालक के जिनका पड़ोस स्थायी और निश्चित होता है।

3. स्कूल का प्रभाव (Effect of School) :— जब बच्चा 5-6 वर्ष का हो जाता है तो माता-पिता उसे स्कूल भेजना आरम्भ कर देते हैं। वहाँ पर अनेक घरों (परिवारों) के बच्चों के सम्पर्क में आता है जो कि भिन्न-भिन्न प्रकार के रहन-सहन वाले होते हैं उनकी सभ्यता तथा संस्कृति भी अलग-अलग होता है। अतः बच्चे का व्यक्तित्व उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता है। स्कूल में बच्चे निम्नलिखित कारकों से प्रभावित होता है :—

(i) विद्यालय का प्रशासन :— स्कूल प्रशासक प्रायः दो स्वभाव या प्रकृति के होते हैं जिनका प्रभाव बच्चों के व्यक्तित्व विकास पर पड़ता है। साथ ही साथ उनके संवेगात्मक स्थिरता का भी निर्धारण होता है। पायमन ने अपने ~~अध्ययन~~ अध्ययन में पाया कि जिन विद्यालयों के प्रशासक लोकतांत्रिक प्रकृति या स्वभाव के होते हैं उनके विद्यार्थियों में परस्पर सहयोग की भावना का विकास अधिक होता है साथ ही साथ संवेगात्मक अभियोजन भी ठीक होता है। ठीक इसके विपरीत सत्तावादी प्रशासन वाले स्कूल के बच्चों में असहयोग की भावना अधिक होती है साथ ही साथ संवेगात्मक अभियोजन भी असंतोषजनक होता है।

शेष पृष्ठ (

Mowrer ने जब समस्या-बालकों को सत्तावादी व्यवस्था से हटा कर लोकतांत्रिक व्यवस्था में रखा तो उनका संवेगात्मक समायोजन बढ़ गया, आक्रमणात्मक व्यवहार घट गये तथा उनमें अन्य सहयोगपूर्ण सामुदायिक जीवन व्यतीत करने की इच्छा बढ़ गई। अतः उपर्युक्त अध्ययनों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्कूली बच्चों के व्यक्तित्व पर उनके स्कूल के प्रशासक का प्रभाव पड़ता है।

(ii) शिक्षक के व्यक्तित्व का प्रभाव :— बच्चे स्कूल में शिक्षक को एक Model या प्रतिमान के रूप में देखते हैं। अतः बच्चे जिस प्रकार अपने माता-पिता के व्यक्तित्व का आत्मसातीकरण करते हैं उसी प्रकार स्कूल में अपने शिक्षकों के व्यक्तित्व का भी आत्मसातीकरण करते हैं। Boynton and others ने देखा कि जो शिक्षक Bernreuter-Personal Inventory-BPI पर तंत्रिका व्याधि के अधिक लक्षण प्रदर्शित करते थे उनके विद्यार्थियों के तंत्रिका व्याधि के लक्षण अधिक पाये गये। Adams, Blood and Tylor ने शिक्षिकाओं एवं विद्यार्थियों को Edwards Personal Perfor-mans Scale-(EPPS) द्वारा मापा तो पाया कि उनमें व्यवस्था, परिपोषण तथा अवमान आदि की आवश्यकताएं अन्य आवश्यकताओं से अधिक होती हैं। Appleby & Haner ने माध्यमिक के प्राध्यापकों एवं भावी प्राध्यापकों के व्यक्तित्व को MMPI द्वारा मापा जिससे ज्ञात किया कि उनमें Hysteria, अवसाद (Depression) के लक्षण औसत से अधिक होते हैं तथा विद्रोह एवं मतभेद की भावनाएं बहुत कम होती हैं। शिक्षकों के इन व्यक्तित्व का प्रभाव भी बच्चों के व्यक्तित्व पर पड़ता है।

4. समुदाय (Association) का प्रभाव :– बच्चों के समुदाय का अभिप्राय समूह, गैंग, क्लब, आदि सामाजिक स्थितियों से है। इन सामाजिक परिस्थितियों का भी प्रभाव बच्चों के व्यक्तित्व निर्धारण पर पड़ता है। सामुदायिक जीवन में ही वह अपने समाज के रीतिरिवाजों, परम्पराओं तथा नैतिक आदर्शों आदि को ग्रहण कर लेता है तथा उसी के अनुरूप आचरण करता है। इसी क्रम में परस्पर सहयोग, मिल-जुल कर रहने प्रतियोगिता, प्रतिस्पर्धा आदि व्यक्तित्व-गुणों को भी अपना लेता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व पर समुदाय के प्रभाव-स्वरूप सामाजिक नियमावली तथा कार्य-भार को संचालित करने की आदतों का विकास होता है अतः स्पष्ट है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व पर समुदाय का भी प्रभाव पड़ता है।

5. सामाजिक-आर्थिक स्तर — आर्थिक आधार पर दो प्रकार की सामाजिक व्यवस्था बनी हुई है। एक पूँजीवादी व्यवस्था तथा दूसरा साम्यवादी व्यवस्था। पूँजीवाद व्यवस्था में जन समुदाय को तीन वर्गों में रखा जाता है – उच्चवर्ग, मध्यम वर्ग तथा निम्नवर्ग। इन वर्गों से अभिप्राय उनकी आर्थिक सम्पन्नता से है। Drucker & Remmers ने अपने अध्ययन में पाया कि निम्न आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों उच्च आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा 50% व्यवहार समस्याएँ अधिक थी। जबकि Sims ने उच्च विद्यालयों तथा महाविद्यालयों के बच्चों के सूचनाओं के आधार पर उनका वर्गीकरण किया और पाया कि श्रमिकवर्ग के विद्यार्थियों के सामाजिक एवं पारिवारिक समायोजन की समस्याएँ मध्यमवर्गीय विद्यार्थियों की तुलना में अधिक थी। सियर्स, मैककोबी तथा लेविन के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि श्रमिक वर्ग की माएँ अपने बच्चों को अधिक प्रतिबन्धों में रखती हैं जबकि उच्चवर्गीय माताएँ अधिक अनुज्ञापक (Permissive) होती हैं। Rosen ने अपने अध्ययन में पाया कि मध्यम और उच्च वर्ग की उपलब्धि-आवश्यकता निम्न वर्गीय बच्चों से ऊँची होती है। इसलिए वे समाज में अपना स्थान ऊँचा रखते हैं।

शेष पृष्ठ - 8 पर

आर्थिक अभाव के कारण निम्नवर्गीय परिवारों में प्रायः एक तनावपूर्ण स्थिति रहती है। परिवार के मूल आवश्यकताओं की पूर्ति में असमर्थ पिता अपने मानसिक तनाव का गुस्सा बच्चों पर उतारते हैं। परिणाम स्वरूप पारिवारिक असमायोजन बढ़ जाता है। Hayward ने अपने अध्ययन में पाया कि जैसे-2 परिवार का आर्थिक स्तर गिरते जाता है वहाँ आर्थिक असमायोजन बढ़ता है तथा व्यक्तित्व पर उसके कुप्रभाव बढ़ते जाते हैं। ऐसे परिवार में रहने वाले बालबच्चों का व्यक्तित्व विकास भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहता है। उपर्युक्त अध्ययनों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति के सामाजिक-आर्थिक स्तर का भी प्रभाव व्यक्तित्व निर्धारण पर निश्चित रूप से पड़ता है।

जैसा कि आरम्भ में ही उल्लेख किया जा चुका है कि व्यक्ति समाज में ही जन्म लेता है अतः स्वभाव से वह सामाजिक प्राणी बन जाता है। उपर्युक्त वर्णित कारकों के आधार पर व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण, विकास या निर्धारण होता है। अतः स्पष्ट है कि व्यक्ति के विकास या निर्धारण में सामाजिक कारकों का प्रभाव निश्चित रूप से पड़ता है। परन्तु सामाजिक कारकों के अलावे व्यक्तित्व निर्धारण में सांस्कृतिक कारकों का भी योगदान होता है जिसकी उत्पत्ति भी निश्चित न निश्चित रूप में सामाजिक परिवेश से ही होती है।